Golden Jubilee Year of India-Bangladesh Friendship (1971-2021)

In 2021, India and Bangladesh commemorate 50 years of their close fraternal friendship, based on deep historical ties, mutual respect and trust. Sharing a long land boundary, both countries also share traditional civilizational links and are intricately bound by history, language, culture and people-to-people ties. Over the past five decades and especially in the last few years, the relationship has rapidly transformed into a vibrant partnership spanning development cooperation, multi modal connectivity, trade and commerce, health cooperation, energy, joint development of shared resources, security and defence ties, youth engagement, and much more. With the strength of this partnership being based on a shared history and sacrifice of both peoples, the relationship enters a historic phase this year with the 'Shonali Adhyay' being jointly scripted under the visionary leadership of Prime Minister of India, Shri Narendra Modi and the Prime Minister of Bangladesh, H.E. Sheikh Hasina.

India and Bangladesh together celebrate two other important anniversaries this year. India joins Bangladesh in celebrating Mujib Borsho, the birth centenary celebrations of 'Jatir Pita', Bangabandhu Sheikh Mujibur Rahman who led his country to freedom from oppression and injustice and towards a sovereign, prosperous, progressive and secular society. In this struggle, India stood by Bangladesh and its people as a close friend and supported their fight for liberation. Being the first to recognize an independent Bangladesh, India extended extensive political, diplomatic and military support to the people's struggle. This year, India and Bangladesh also celebrate the 50th anniversary of the 1971 Liberation War, where the Indian armed forces fought shoulder-to-shoulder with the Muktijoddhas, and the millions who made the ultimate sacrifice for their motherland. Besides hosting more than ten lakh refugees as an extended fallout of the 1971 Liberation War, thousands of Indian soldiers, sailors and airmen sacrificed their lives for the independence of Bangladesh.

In this spirit of friendship and solidarity, India is issuing a Commemorative Postage Stamp on 'India-Bangladesh Friendship' depicting the National War Memorial, New Delhi, India and the Jatiyo Smriti Soudho or the National Martyrs' Memorial, Savar, Bangladesh.

The National War Memorial at New Delhi, India honours soldiers of the Indian Armed Forces who sacrificed their life in the service of the nation. Spread over forty acres, the memorial is built in the 'Chakravyuh' formation, which encircles an 'eternal flame' at the of the central obelisk. Built in the form of four concentric circles, each such Chakra signifies different values of the Indian Armed Forces: immortality, bravery, sacrifice and protection. The circles have displays of the main battles fought by India and also names of each of the casualties inscribed therein, including during the 1971 War. Upholding the spirit of unity and patriotism, it is a pilgrimage site for millions of Indians.

The Jatiyo Smriti Soudho, or the National Martyrs' Memorial at Savar (near Dhaka), Bangladesh is dedicated to the heroic struggle of the millions of patriots who laid down their lives in Bangladesh's freedom struggle. The monument with its pointed spire symbolizes the victory of the people of Bangladesh in the face of mass atrocities and oppression by the Pakistani regime. It also symbolizes the link between the shaheed, the living freedom fighters and the patriotic masses. The 150-feet high tower tapers upwards on seven isocelese triangles signifying the various stages of the national independence movement of Bangladesh, starting with the Language Movement of 1952 and ending in victory in December 1971.

The complex comprises an artificial lake, twin bridges and a reflecting pool, set amidst lush greenery. The twin bridges lead to the most sacred part of the monument, where ten mass graves of martyrs are preserved as a mark of respect to the countless unknown freedom fighters who laid down their lives for Bangladesh's future.

Written with indelible ink, the story of the steadfast India-Bangladesh friendship has expanded and strengthened over the last fifty years. The stamp is a dedication to this eternal friendship.

Credits:

Stamps/ FDC/ Brochure/ : Smt. Nenu Gupta

Text: : Ministry of External Affairs
Government of India

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



भारत-बांग्लादेश मैत्री का स्वर्ण जयंती वर्ष (1971-2021)
GOLDEN JUBILEE YEAR OF INDIA-BANGLADESH FRIENDSHIP (1971-2021)

विवरणिका BROCHURE

भारत–बांग्लादेश मैत्री का स्वर्ण जयंती वर्ष (1971–2021)

2021 में भारत और बांग्लादेश अपनी प्रगाढ़ मैत्री के 50 वर्ष पूरे कर रहे हैं। दोनों देशों के संबंध गहरे ऐतिहासिक स्वरूप के हैं, जो परस्पर सम्मान और विश्वास की भावना पर आधारित हैं। दोनों देशों के बीच एक लंबी साझा जमीनी सरहद है और दोनों ही देश पारंपरिक तौर पर प्राचीन सभ्याताओं से जुड़े हैं और इतिहास, भाषा, संस्कृति तथा लोगों के बीच परस्पर संबंधों के ताने–बाने में बुने हैं। पिछले पांच दशकों के दौरान, और विशेषकर विगत कुछ वर्षों के दौरान दोनों देशों के बीच इस संबंध ने एक सक्रिय भागीदारी का रूप लिया है, जिसके दायरे में विकास से जुड़े सहयोग, मल्टीमोडल कनेक्टिविटी, व्यापार और वाणिज्य, स्वास्थ्य के क्षेत्र में सहयोग, ऊर्जा, साझा संसाधनों का संयुक्त विकास, सुरक्षा और रक्षा क्षेत्रों में भागीदारी के साथ–साथ युवा वर्गों के बीच सह–संपर्क और अन्य, अनेकानेक क्षेत्र शामिल हैं। साझा इतिहास और दोनों ही देशों के लोगों के बलिदान की नींव पर विकसित यह आपसी संबंध, इस वर्ष ऐतिहासिक दौर में कदम रख रहा है। और इस दिशा में, भारत के प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी और बांग्लादेश की प्रधानमंत्री, महामहिम शेख हसीना के संयुक्त दूरदर्शी नेतृत्व में 'शोनाली अध्याय' लिखा जा रहा है।

भारत और बांग्लादेश, दोनों ही इस वर्ष दो और महत्वपपूर्ण वर्षगांठ भी मना रहे हैं। बांग्लादेश, 'जातीर पिता', बंगबंधु शेख मुजीबुर्रहमान की जन्मशती के रूप में 'मुजीब वर्ष' मना रहा है। शेख मुजीबुर्रहमान ने बांग्लादेश को दमन और अन्याय के चक्र से आजादी दिलाकर एक संप्रभु, समृद्ध, प्रगतिशील और धर्मनिरपेक्ष समाज की नींव रखी। इस आजादी के संघर्ष में भारत ने एक करीबी मित्र के तौर पर बांग्लादेश का भरपूर सहयोग किया और उनकी मुक्ति आंदोलन में उनका समर्थन किया। भारत पहला देश था, जिसने स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में बांग्लादेश को मान्यता प्रदान की और राजनीतिक और कूटनीतिक संबंध स्थापित किए तथा बांग्लादेशी लोगों को उनके संघर्ष में फौजी मदद भी की। इसी वर्ष भारत और बांग्लादेश 1971 के मुक्ति युद्ध की वर्षगांठ भी मना रहे हैं, जिसमें भारतीय सशस्त्र बल ने मुक्ति योद्धाओं और करोड़ों ऐसे लोग जिन्होंने मातृभूमि के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए, के साथ कंधे से कंधा मिलाकर युद्ध किया। 1971 के मुक्ति युद्ध के परिणामस्वरूप 10 लाख से अधिक शरणार्थियों को शरण देने के अतिरिक्त हजारों भारतीय सैनिकों, नाविकों और एयरमेन ने बांग्लादेश की आजादी के युद्ध में अपनी जान की बाजी लगा दी।

मैत्री और एकजुटता की इस भावना के अनुरूप भारत, 'भारत–बांग्लादेश मैत्री' के विषय पर एक स्मारक डाक–टिकट जारी कर रहा है, जिस पर राष्ट्रीय समर स्मारक, नई दिल्ली, भारत और जातियों स्मृतशोऊधो अर्थात राष्ट्रीय शहीद स्मारक, सावर, बांग्लादेश का अंकन है।

नई दिल्ली, भारत में स्थित राष्ट्रीय समर स्मारक, भारतीय सशस्त्र सेना के उन सैनिकों के सम्मान में बनाया गया है, जिन्होंने राष्ट्र की सेवा में अपने प्राणों की आहुति दी। चालीस एकड़ में फैले इस स्मारक को 'चक्रव्यूह' के आकार में निर्मित किया गया है, जिसके बीचों–बीच केन्द्रीय स्तंभ में 'अमर ज्योति' प्रज्ज्वलित रहती है। चार संकेन्द्रीय वृत्तों के आकार में बने इस स्मारक का प्रत्येक चक्र भारतीय सशस्त्र बल के मूल्यों, अमरता, बहादुरी, बलिदान और सुरक्षा को दर्शाता है। इन चक्रों में, 1971 के युद्ध सहित भारत द्वारा लड़े गए अन्य प्रमुख युद्धों और उनमें मारे गए सैनिकों के नाम अंकित हैं। एकता और देशभक्ति की भावना को दर्शाता यह स्मारक स्थल करोड़ों भारतीयों के लिए तीर्थस्थल है।

जातीय स्मृतशोऊधो अर्थात राष्ट्रीय शहीद स्मारक, सावर (ढाका के निकट), बांग्लादेश उन लाखों देशभक्तों के साहसिक संघर्ष के प्रति समर्पित है, जिन्होंने बांग्लादेश की आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। इस स्मारक की नोकदार मीनार, पाकिस्तानी शासन तंत्र के भयंकर अत्याचार और दमन का मुकाबला कर जीत हासिल करने वाले बांग्लादेश के बहादुर लोगों की विजय का प्रतीक है। यह स्मारक, शहीदों, जीवित स्वतंत्रता सेनानियों और देशभक्त जनता के सह–संबंध का भी द्योतक है। बांग्लादेश के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न चरणों को दर्शाते हुए 150 फीट ऊंचा टावर स्मारक 07 समद्विबाहु त्रिकोणीय पिरामिड आकार की संरचनाओं से बना हुआ है जो बांग्लादेश के राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के विभिन्न चरणों को दर्शाता है और जिनकी शुरुआत वर्ष 1952 के भाषा आंदोलन से आरंभ होते हुए दिसंबर, 1971 में विजय के साथ समाप्त होती है।

इस परिसर में मनोरम हरियाली के बीच एक कृत्रिम झील, दो समरूप पुल और एक प्रतिबिंबित पुल है। ये समरूप पुल स्मारक के सबसे पवित्र हिस्से की ओर ले जाते हैं, जहां शहीदों की दस सामूहिक कब्रें अनगिनत अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों के सम्मान के चिह्नों के रूप में संरक्षित हैं, जिन्होंने बांग्लादेश के भविष्य के लिए अपना जीवन का बलिदान दे दिया।

भारत–बांग्लादेश मैत्री की अटूट गाथा पिछले 50 वर्षों में और सुदृढ़ हुई है। यह डाक–टिकट इसी अटूट मित्रता को समर्पित है।

आभार :

डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण विवरणिका : श्रीमती नीनु गुप्ता

पाठ: : विदेश मंत्रालय, भारत सरकार

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	504000
Stamps Printed	:	504000
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफ सेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूतिमुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाकविभाग, भारतसरकार। डाक–टिकटें, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5-00